Indian J. Soc. & Pol. 06 (02):105-108 :2019

ISSN: 2348-0084(P)
ISSN: 2455-2127(O)

भारतीय अर्थव्यवथा एवं सतत विकास

गोपाल प्रसाद[1], अमित कुमार[2]

[1]आचार्य एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग दी0द0उ0गो0वि0वि0 गोरखपुर, उ0प्र0, भारत

[2]शोध छात्र (जे0आर0एफ0) राजनीति विज्ञान विभाग दी0द0उ0गो0वि0वि0 गोरखपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

सतत विकास की अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग 1987 में ब्रटलैंड रिपोर्ट 'हमारा साझा भविष्य के तहत किया गया था। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वैश्विक स्तर पर सामाजिक न्याय, मानव गरिमा, शांति एवं सुरक्षा स्थापित करने के लिए वर्ष 2000 में आठ सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों के साथ 18 संलग्न लक्ष्यों को 2015 तक प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया था। वर्ष 2015 में 8 सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों को ही विस्तारित कर 17 सतत विकास लक्ष्यों में परिवर्तित कर दिया, जिसके अन्दर 169 संलग्न लक्ष्य सन्निहित है। इन्हें 2030 तक प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसका शीर्षक है "अपनी दुनिया में बदलाव : सतत विकास के लिए 2030 का एजेंडा" ।

KEYWORDS: *सतत विकास, सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य, ग्लोबल पीस इण्डेक्स*

विकास एक दीर्घकालिक, बहुआयमी एवं गतिशील प्रकिया है। सीमित संसाधन एवं व्यापक लक्ष्य के कारण सतत विकास की अवधारणा काफी महत्वपूर्ण हो जाती है। सतत विकास, विकास का वह स्वरूप है जिसमें वर्तमान विकास को बिना बाधित किये भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन को सुरक्षित एवं संरक्षित करने का सार्थक प्रयास किया जाता है।

सतत विकास की अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग 1987 में ब्रटलैंड रिपोर्ट 'हमारा साझा भविष्य के तहत किया गया था। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वैश्विक स्तर पर सामाजिक न्याय, मानव गरिमा, शांति एवं सुरक्षा स्थापित करने के लिए वर्ष 2000 में आठ सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों के साथ 18 संलग्न लक्ष्यों को 2015 तक प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया था। वर्ष 2015 में 8 सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों को ही विस्तारित कर 17 सतत विकास लक्ष्यों में परिवर्तित कर दिया, जिसके अन्दर 169 संलग्न लक्ष्य सन्निहित है। इन्हें 2030 तक प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसका शीर्षक है ''अपनी दुनिया में बदलाव : सतत विकास के लिए 2030 का एजेंडा'' ।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित 17 सतत विकास लक्ष्य निम्नलिखित है–

1. गरीबी के सभी रूपों का विश्व से संपूर्ण समाप्ति।
2. भूखमरी की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा, बेहतर पोषण एवं टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना।
3. सभी वर्ग एवं आयु के लोगों की स्वास्थ्य सुनिश्चितता।
4. समावेशी एवं गुणवत्तापरक शिक्षा की सुनिश्चितता।
5. लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तिकरण।
6. स्वच्छ जल एवं स्वच्छता का सतत प्रबंधन।
7. स्वस्छ, विश्वसनीय एवं टिकाऊ ऊर्जा सुनिश्चित करना।
8. समावेशी एवं सतत आर्थिक विकास, पूर्ण एवं उत्पादक रोजगार की व्यवस्था।
9. बुनियादी ढ़ाँचा, नवाचार एवं सतत औद्योगिकरण को बढ़ावा देना।
10. देशों के मध्य एवं देश के भीतर असमानता कम करना ।
11. संपोषणीय शहर एवं समुदाये की स्थापना ।
12. संपोषणीय उपभोग एवं उत्पादन के तरीके सुनिश्चित करना।
13. जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से मुकाबला हेतु त्वरित कार्यवाही।
14. समुद्रीय एवं महासागरीय जीवन, संसाधन का संरक्षण।
15. भूतल पर वन संरक्षण, प्रतिकूल भू–अपक्षय को रोकना एंव जैवविविधता में वृद्धि।
16. शांति, न्याय हेतू सुदृढ़ संस्थानों का निर्माण।
17. सतत लक्ष्य प्राप्ति हेतू सहयोग एवं सहभागिता बढ़ाना।

सतत विकास लक्ष्य या एजेंडा 2030 में मुख्यतः 5P (People, Planet, Peace, Prosperity and Partnership) पर जोर दिया गया है। भारत सरकार ने भी सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत एवं सतत समावेशी बनाने का सार्थक प्रयास किया है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की छठी सर्वोच्च अर्थव्यवस्था है (जी0डी0पी0 के संदर्भ में)। आज भारत में रिकार्ड खाद्यान उत्पादन (2016–17 में 275.11 मिलियन मिट्रिक टन वार्षिक) हो रहा है। 2017–18 में भारतीय आर्थिक वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत था। वित्तीय वर्ष 2018–19 में अन्तराष्ट्रीय मृदा कोष (आई0एम0एफ0) ने भारत के विकास दर (7.3 प्रतिशत) अनुमानित रहने का घोषणा की है, जो विश्व में सर्वाधिक एवं गतिशील है। अमेरिकी क्रेडिट एजेन्सी मूडीज ने 13 वर्षो बाद 2017 में भारतीय अर्थव्यवस्था की रेटिंग को Baa3 से सुधार करके Baa2 श्रेणी में परिवर्तित कर दिया है।

भारत सरकार ने टिकाऊ कृषि (SDG 2 का हिस्सा) के विकास हेतु जैविक खेती (Organic Farming) पर विशेष जोर दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप सिक्किम राज्य भारत का प्रथम पूर्ण जैविक राज्य का दर्जा कर चुका है। मिजोरम और हिमाचल प्रदेश इस मार्ग में अग्रसर है। आज भारत में लगभग 22.5 लाख हे0 जमीन पर जैविक खेती हो रही है। विश्व में जैविक खेती के मामले में भारत का

1: Corresponding Author

अभी 15वां स्थान है। पिछले वित्तीय वर्ष 2017–18 में 1.35 मिलियन मिट्रिक टन जैविक उत्पादों का उत्पादन किया गया है। 2015–16 में 263687 मिट्रिक टन जैव उत्पाद के निर्यात से देश को कुल 298 मिलियन अमेरिकी डॉलर प्राप्त हुए है। भारत सरकार ने हरित क्रान्ति–कृषोन्नति योजना (2017–20 तक संचालित, इसमें कुल 11 योजनाएँ/मिशन शमिल), ऑपरेशन ग्रीन (आलू , प्याज एवं टमाटर के मूल्य स्थिर करना) सम्पदा योजना (खाद्य प्रसंस्करण हेतु) राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड, 24 कृषि फसलों की न्यूनत्तम समर्थन मूल्य (MSP) में मूल्य की लागत का 1.5 गुना करना आदि योजनाओं के सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है।

भारत सरकार ने अर्थव्यवस्था को मजबूत और भ्रष्टाचार मुक्त बनाने हेतु वस्तु एवं सेवा कर (जी0एस0टी0), विमुद्रीकरण (Demonitization), बैंकक्रप्टसी एण्ड इनसॉलवेन्सी कोड 2018, भगौड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम 2018, बेनामी संपत्ति लेन–देन निषेध संशोधन अधिनियम 2018 (PBPT Act 1998 में संशोधन), सशक्त परियोजना (बैंको की बढ़ती एन0पी0ए0 को दूर करने के लिए), बैंकिग आंतरिक लोकपाल योजना 2018 आदि योजनाओं का दृढ़ता से क्रियान्यवयन सुनिश्चित किया है।

जल संरक्षण (SDG 6 का हिस्सा) के क्षेत्र में भारत सरकार ने जल क्रांति अभियान (2015 से शुरू) के तहत 1001 गाँवों का चयन किया है (लक्ष्य 1348 जलग्राम का चयन करना) जिसका लक्ष्य जल संभरण एवं संरक्षण में वृद्धि करना है। इसके तहत प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, एकीकृत वाटरशेड मैनेजमेंट कार्यक्रम, राष्ट्रीय जल मिशन कार्यक्रम, त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम, बाँध पुनरूद्वार एवं सुधार परियोजना आदि शामिल है। प्रत्येक जलग्राम में सुजलम कार्ड से पेयजल स्त्रोतों की गुणवत्ता के बारे में वार्षिक सूचना सरकार को दी जायेगी। ड्रिप और स्प्रिंकल सिंचाई विधियों को अपनाने पर भारत सरकार जोर दे रही है जिससे क्रमशः 80 प्रतिशत एवं 50–70 प्रतिशत (कुल सिन्चित जल) जल की बचत होगी। तमाम जल संरक्षण उपायों के बावजूद भी देश की 7.6 करोड़ आबादी (कुल भारतीय जनसंख्या का 6 प्रतिशत) स्वच्छ जल से वंचित है जो विश्व में सर्वाधिक है (WHO के अनुसार) भारत में बारिश का केवल 12 प्रतिशत जल ही संरक्षित हो पाता है। इसके निदान के लिए जल संभरण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है, फिर भी आज जल प्रदूषण भारत के लिए एक गम्भीर समस्या बनी हुई है।

भारत सरकार ने लैंगिक न्यायालय हेतु विभिन्न कार्यक्रमों को धरातल पर लाने का सार्थक प्रयास किया है, जैसे– जननी सुरक्षा योजना, मातृत्व लाभ योजना, मातृत्व अवकाश में वृद्धि (26 सप्ताह तक), बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, वैभव लक्ष्मी योजना, सबला योजना आदि।

भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में भी सराहनीय प्रयास किया गया है। समग्र शिक्षा योजना, राइज (RISE) योजना, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, प्राधानमंत्री अनुसंधान अध्येता कार्यक्रम आदि योजनाओं एवे कार्यक्रमों का सफल संचालन किया जा रहा है।

इसी प्रकार भारत सरकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेक लोक कल्याणकारी योजनाओं जैसे आयुष्मान भारत : प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, मातृत्व लाभ कार्यक्रम, जीरो हंगर कार्यक्रम, स्वस्थ बच्चे स्वस्थ भारत, इन्द्रधनुष मिशन (सार्वभौमिक टीकाकरण हेतु), राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन आदि का सफल संचालन सुनिश्चित किया जा रहा है।

स्वच्छ ऊर्जा एवं सतत ऊर्जा के विकास हेतु भारत सरकार ने गोवर्धन योजना, कुसुम योजना, अंतराष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solor Alliance), पेरिस समझौता 2015, स्वच्छ एवं सुरक्षित नाभिकीय ऊर्जा हेतु विभिन्न देशों के साथ समझौता आदि को लागू करने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

इसी प्रकार भूखमरी उन्मूलन हेतु खाद्य सुरक्षा विधेयक, अंत्योदय अन्न योजना, जीरो हंगर कार्यक्रम, सेवा भोज योजन आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारत सरकार के तमाम योजनाओं के क्रियानवयन का जब हम अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सतत विकास सूचकांको के आधार पर गहन मूल्यांकन करते है तो अश्चर्यचकित करने वाले निम्नलिखित परिणाम सामने आते है–

सतत विकास सूचकांक 2016 (SDSN-Sustainable Development Solution Network

वर्टल्समाइन स्टिफटंग द्वारा संयुक्त रूप से जारी) – इस सतत विकास सूचकांक हेतू कुल 149 देशो के आकड़ों को शामिल किया गया था। भारत की रैकिंग (110वां) अपने पड़ौसी देश भूटान (82वां), श्रीलंका (97वां) एवं नेपाल (103वां) से भी काफी नीचे था।

सतत विकास सूचकांक 2017–

सर्वेक्षण में शामिल किये गये कुल 157 देशों में से भारत की रैकिंग (116वां) में 2016 की तुलना में 6 स्थानों की गिरावट दर्ज की गयी थी। भारत की रैकिंग अपने पडोसी देशों श्रीलंका (81वां), भूटान (83वां), एंव नेपाल (105वां) से पुनः नीचे था।

मानव विकास सूचकांक 2018 UNDP –

इस सूचकांक में भारतीय रैकिंग (130वां) में एक स्थान का सुधार हुआ। भारत की रैकिंग अपने पडोसी देशों भूटान (134वां), बांग्लादेश (136वां), नेपाल (149वां) एवं पाकिस्तान (150वां) से आगे है, लेकिन श्रीलंका (76वां), चीन (86वां) एवं मालद्वीव (101वां) से काफी पीछे है।

विश्व प्रसन्नता सूचकांक (World Happiness Index) 2018 – UNSDSN

कुल शामिल 156 देशों में भारत की रैकिंग में 11 स्थानों की गिरावट आयी है। वर्तमान रैकिंग 133 वां है।

भ्रष्टाचार बोध सूचकांक (Corruption Perception Index) 2017

ट्रान्सप्रेन्सी इन्टरनेशनल द्वारा जारी। इस सूचकांक में कुल शामिल 180 देशों में भारत की रैंकिग 2016 की तुलना में 2017 में दो स्थानों की गिरावट के साथ 81वें स्थान पर है।

वैश्विक भूखमरी सूचकांक (Global Hunger Index) 2017 – IFPRI (International Food Policy Research Institute)

इस सूचकांक में कुल शामिल 119 देशों में भारत की रैंकिग अल्प विकसित देश जिबूती, रवांडा के साथ संयुक्त रूप से 100वॉ है, जो 2016 में भारत की रैंकिग (97वॉ) से भी खराब है। भारत को इस सूचकांक में 'गम्भीर वर्ग' की श्रेणी में रखा गया है।

वैश्विक शांति सूचकांक (Global Peace Index) 2018

इस सूचकांक में शामिल कुल 163 देशों में 136वॉ स्थान है।

नीति आयोग द्वारा जारी 'SDG India Index 2018'

इस सूचकांक में संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा घोषित 17 सतत विकास लक्ष्यों में से लक्ष्य संख्या– 12,13,14 एवं 17 को छोड़ते हुए अन्य 13 लक्ष्यों के बारे में 62 प्राथमिकता सूचको पर आधारित राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशो के सतत विकास का मूल्यांकन किया गया है। इस सूचकांक में उपलब्धियों का आकलन (0–100 मानक मान पर आधारित) आकलन निम्नलिखित प्रकार से किया गया है–

एसडीजी इण्डिया सूचकांक 2018 का मान	उपलब्धि का स्तर
100	लक्ष्य प्राप्तिकर्ता
65–99	अग्र पंक्ति में
50–64	उपलब्धियाँ प्राप्त करने की ओर अग्रसर
0–49	आकांक्षी

एसडीजी इण्डेक्स का स्कोर	राज्य एवं कन्द्रसाशित प्रदेश
69	केरल एवं हिमाचल प्रदेश
68	चंडीगढ़
66	तमिलनाडु
65	पुदुचेरी
64	आन्ध्रप्रदेश, गोवा गुजरात, कर्नाटक,महाराष्ट्र
50–59	झारखण्ड, उड़ीसा, अरूणाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, म0प्र0, मणिपुर, मिजोरम, राजस्थान, छत्तीसगढ़

नोट : शेष राज्य एवं केन्द्रशासित प्रदेश का एस0डी0जी0 इण्डिया इंडेक्स 50 से कम है।

विश्लेषण :

- एस0डी0जी0 इण्डिया इन्डैक्स के तहत कोई भी राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश लक्ष्य प्राप्तिकर्ता के श्रेणी में नहीं है। केवल तीन राज्य– हिमाचल प्रदेश, केरल एवं तमिलनाडु और दो केन्द्र शासित प्रदेश चंदीगढ़ एवं पुदुचेरी ही अग्रपंक्ति की श्रेणी में है।
- एस0डी0जी0 लक्ष्य 1,2,3,4,5 के मामले में भारत के एक भी राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश का स्कोर 100 नहीं है।
- एस0डी0जी0 4 (गुणात्मक एवं समावेशी शिक्षा की सुनिश्चितता) – इस मामले में भारत का कोई भी राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश लक्ष्य प्राप्तिकर्ता के श्रेणी में शामिल नहीं है। भारत के केवल 18 राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश अग्रणी पंक्ति की श्रेणी में शामिल है और 8 राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश आकांक्षी श्रेणी में शामिल है। पूर्वोत्तर का एक मात्र राज्य मणिपुर अग्रणी पंक्ति में शमिल है। अखिल भारतीय स्तर पर एस0डी0जी0 4 सूचकांक 2018 का मान 58 है, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली की औसत दर्जे की ओर इंगित करता है।
- एस0डी0जी0 लक्ष्य 5 (लैंगिक समानता) – यह लक्ष्य भारत में अभी भी दिवास्वप्न है। भारत के एक भी राज्य अग्रणी पंक्ति में नहीं है, केवल केरल (50) और सिक्किम (50) लक्ष्य प्राप्ति के आतुर राज्यों के श्रेणी में है। बिहार (24), मणिपुर (25) एवं उ0प्र0 (27) की स्थिति तो अत्यंन्त दयनीय है। केन्द्र शासित प्रदेशों में केवल चंदीगढ़ और अण्डमान निकोबार द्वीप समूह ही प्रयत्नशील श्रेणी में शामिल है। विडम्बना है कि राजस्थान में 10 वर्षो तक वसुन्धरा राजे, उ0प्र0 में कुल 5 बार महिला मुख्यमंत्री, पश्मि बंगाल में ममता बनर्जी, बिहार में रावड़ी देवी, तमिलनाडु में जय ललिता, दिल्ली में शीला दीक्षित के रहते हुए भी लैंगिक समानता के लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सका है।
- एस0डी0जी0 लक्ष्य 6 (स्वच्छ एवं स्वच्छता) के मामले में गुजरात, चंडीगढ़, लक्ष्यद्वीप एंव दादर नगर हवेली का स्कोर 100 है, यानि इन सभी ने लक्ष्य को हासिल कर लिया है। देश का एकमात्र राज्य गुजराज यह दावा कर सकता है कि वह अपने नगरिको को स्वच्छ पेय जल एवं स्वच्छतायुक्त वातावरण उपलब्ध कराने में सक्षम है। इस मामले में छत्तीसगढ़ (98) एवं हिमाचल प्रदेश (95) की स्थिति काफी अच्छी है, जबकि बिहार (31) की स्थिति सबसे दयनीय है।
- एस0डी0जी0 लक्ष्य 9 (उद्योग, नवाचार एवं अधिरचना) के मामले में केवल दिल्ली और पुदुचेरी ही पूर्ण लक्ष्य हासिल कर चुके है।
- एस0डी0जी0 लक्ष्य 10 (देश के अन्दर असमानता कम करना) के मामले में मेघालय, मिजोरम, तेलांगना, दादर नगर हवेली, दमन–दीव आदि ने पूर्ण लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

सतत विकास सूचकांक 2016, 2017 एवं एस0डी0जी0 इण्डिया इन्डैक्स 2018 तथा मानव विकास सूचकांक 2018 आदि का गहन अवलोकन एवं आकलन करने के पश्चात् यह तथ्य सामने आता है कि भारत सतत विकास के क्षेत्र में अभी केवल औसत अवस्थिति को प्राप्त है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हम भूटान, श्रीलंका एवं नेपाल आदि पडोस देशों से पीछे है लेकिन मानव विकास सूचकांक में हम भूटान, बांग्लादेश, नेपाल एवं पाकिस्तान से आगे है तो श्रीलंका, चीन और मालदीव से काफी पीछे है। एस0डी0जी0 इण्डिया इन्डैक्स 2018 का आकलन करें तो राज्यों में विकास एवं उपलब्धियों के बड़े–बड़े दावे करने वाले राजनेताओं को यह इन्डैक्स एक वास्तविक आइना दिखाता है और अपने राज्यों में सत्तासीन सरकार द्वारा व्याख्यायित थोथी

उपलब्धियों की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। समग्र रूप से देश की आधी आबादी केवल विकास के दावों पर ही जीवन व्यतित कर रही है। बहुत जरूरी है कि केन्द्र और राज्य सरकारे सहकारी संघवाद की विचारधारा के तहत संयुक्त राष्ट्रसंघ के सतत विकास लक्ष्यों को मिलकर पूरा करने का सार्थक प्रयास करें। मानव पूँजी (Human Capital) का उचित उपयोग हेतु प्रशासनिक उदासीनता एवं भ्रष्टाचार आदि को समाप्त कर सतत विकास लक्ष्यों को यथार्थ की धरातल पर जनता हेतू लागू करना चाहिए, ताकि वैश्विक स्तर पर समानता, न्याय, शांति एवं सुरक्षा आदि की स्थापना सुनिश्चित की जा सकें।

REFERENCES

एस0डी0जी0 इण्डिया इण्डेक्स 2018

रूर्डा, निको 2017 *फन्डामेंटल आफ सस्टेनेबल डेवलपमेंट*, न्यूयार्क, रूटलेज पब्लिकेशंस

करप्सन परसेप्सन इण्डेक्स 2017

विलियम, एफसीएससी, ओलिवर,2014 सस्टेनेबल डेवलपमेंट : दी यू0एन0 मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स, दी यू0 एन0 ग्लोबल काम्पेक्ट एण्ड कामन गुड, डेम प्रेस

हयूमन डेवलपमेंट इण्डेक्स,2018

हेंसन, टी कोबेन, पी कोर्बा, शा एम0 टीमोथी 2017 फ्राम एम0डी0जी0 टू एसडीजीजः पाप्लाम्पू अफ्रीकन डेवलपमेंट, न्यूयार्क,रूटलेज पब्लिशर्स

सस्टेनेबल डेवलपमेंट इण्डेक्स 2016,2017

वर्ल्ड हैपिनेस इण्डेक्स 2018

ग्लोबल हंगर इण्डेक्स 2017

ग्लोबल पीस इण्डेक्स 2018